अनुप्रासका अन्वेषण।

जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी

अथ

अनुप्रासका अन्वेषण ।

(पूर्वार्द्ध)

प्रणेता

पंडित जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी

एम० आर० ए० एस० ।

प्रकाशयिता

चतुर्वेदी भोलानाथ शर्म्मा,

१०२, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट,

कलकत्ता ।

सं० १९७२

बार
नार

दाम
दस पैसे ।

॥ श्रीः ॥
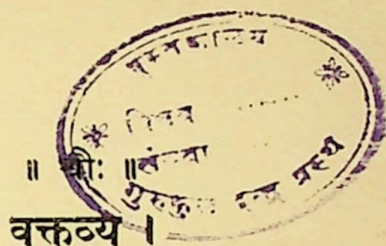
वक्तव्य ।

मेरा कर्त्तव्य है कि, अपना वक्तव्य विस्तृत न कर संक्षेपमें समाप्त कर दूं क्योंकि बहुमूल्य समय बातका बतंगड़ बनानेमें बिताना बुद्धिमानोंके बिलकुल बिपरीत है। इस कारण कहना केवल यही है कि, मैंने पञ्जाबके परित्यक्त और पवित्र प्रयागके प्रसिद्ध षष्ठ "हिन्दी साहित्य सम्मेलन"में यह अपूर्ण प्रबन्ध पढ़ा था। हिन्दी हितैषी, सहित्यसेवी, सुरसिक, समझदार श्रोताओंने सुनकर इसे सराहा। उन्हींकी प्रेमपूर्ण प्रेरणा और परामर्शसे इसका पूर्व्वार्द्ध ही पुस्तकाकार प्रकाशित करनेका प्रयासी होता हूं। पूर्णाशा है, प्रेमी पाठक भी पढ़कर प्रसन्नता प्राप्त करेंगे। उमापतिकी उपासनासे उत्साहित हो उत्तरार्द्ध भी उपस्थित करनेमें उदासीनता न दिखा उचित उद्योग करूंगा। किमधिकम्।

१०३, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट,
कलकत्ता,
पौष पूर्णिमा, सं० १९७२

मर्म्मज्ञमानसमराल
मिश्र जगन्नाथप्रसाद
चतुर्वेदी।

॥ श्रीः ॥

निवेदन ।

श्रीमान् सभापति महाशय और सज्जन सभासदो,

प्रबन्ध पाठके पहले यह प्रार्थना परमावश्यक प्रतीत होती है कि, इसका नाम "अनुप्रासका अन्वेषण" है और अभी यह अधूरा ही है। यह सर्व्वसाधारणके लिये नहीं सिर्फ साहित्यसेवियोंके सन्तोषके लिये लिपि-बद्ध हुआ है। यह कब, कहां, क्यों और कैसे लिखा गया यह सुननेसे ही समझमें आ जायगा। यदि आप लोगोंने पसन्द किया तो इसे पूर्ण करनेका पूरा परि-श्रम करूंगा। अन्यथा अधबिचमें अपूर्ण ही रहने दूंगा।
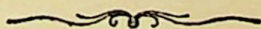
॥ श्रीः ॥

अनुप्रासका अन्वेषण ।
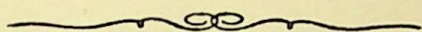
वर्षों व्यतीत हुए, मेरे आदरणीय अध्यापक श्रीयुत ललितकुमार वन्द्योपाध्याय विद्यारत्न एम० ए० महाशयने कलकत्ता-कालेज स्क्वायरके युनिवर्सिटी इन्सीच्यूटमें सन्ध्या समय सभापतिके स्थानपर सर गुरुदास बनर्जीको बिठा "अनुप्रासेर अट्टहास" शीर्षक बंगला प्रबन्ध पाठ किया था जिसमें उन्होंने बंगभाषामें व्यवहृत, प्रयुक्त और प्रचलित संस्कृत, अंगरेजी, उर्दू, हिन्दी और बंगला शब्द, महावरे और कहावतें उद्धृत कर अनुप्रासका अधिकार बंगला भाषापर दिखाया था। प्रबन्ध पढ़े जानेपर बंगला वंगवासीके (सम्पादक) बाबू बिहारीलाल सरकार बोले कि, "बांगलाई कोबीतार भाषा। कारोन एते ओनेक ओनुप्रास आछे। ओतो अनुप्रास आर कोनो भाषाते नाइं। ओनुप्रास कोबीतार पेकटी गून।" अर्थात् 'बंगला ही कविताकी भाषा है

क्योंकि इसमें जितना अनुप्रास है उतना और किसी भाषामें नहीं। अनुप्रास कविताका एक गुण है।'

मुझे बूढ़े बिहारी बाबूकी यह बात बहुत बुरी लगी। क्योंकि भारतके भालकी बिन्दी इस हिन्दीको मैं कविताकी भाषा जानता था क्या अबतक जानता और मानता हूं। मैंने सोचा, क्या हिन्दी भाषामें अनुप्रासका अभाव है? यदि नहीं, तो बंगला ही क्यों कविताकी भाषा घोषित की जायगी? यह सोच विचार मैंने हिन्दीमें अनुप्रासका अन्वेषण आरम्भ कर दिया। इस अनुसन्धानमें जो कुछ अपूर्व्व आविष्कार हुआ वही आज आप लोगोंके आगे अर्पित करता हूं।

संस्कृत साहित्यमें अनुप्रासका अनुसन्धान अनावश्यक माना क्योंकि एक तो वह भारतकी प्रायः सब ही भाषाओंकी जननी है। उसपर सबकी समान श्रद्धा है। दूसरे उसके स्तोत्रतक जब अनुप्राससे अधिकृत हैं तब काव्योंकी कथा ही क्या है? निदर्शनके लिये निम्न-लिखित स्तव ही पर्य्याप्त होगा——

"गांगं वारि मनोहारि मुरारिचरणच्युतम्।
त्रिपुरारि शिरश्चारि पापहारि पुनातु माम्॥"

"पापापहारि दुरितारि तरङ्ग धारि
शैलप्रचारि गिरिराजगुहाविदारि।
झंकारकारि हरिपादरजोपहारि
गांगं पुनातु सततं शुभकारिवारि॥"

एक और सुनिये
"नमस्तेऽस्तु गंगे त्वदंगप्रसंगात्
भुजङ्गास्तुरङ्गाः कुरङ्गाः प्लवंगाः।
अनंगारि रङ्गाः ससंगाः शिवांगा
भुजङ्गाधिपांगी कृतांगा भवन्ति॥"

हिन्दी साहित्यमें भी मैंने पद्यकी ओर प्रस्थान नहीं किया क्योंकि मैं जानता हूं कि, वहां अनुप्रासका अड्डा अद्भुतरूपसे जमा हुआ है। यथा—

चम्पक चमेलिनसों चमनि चमत्कार,
चमू चंचरीकके चितौत चोरे चित हैं।
चांदीको चबूतरा चहूंघां चमचम करे,
चन्दनसों गिरधरदास चरचित हैं।
चारु चांदतारेको चंदोवा चारु चांदनीसो,
चामीकर चोवनपै चंचला चकित हैं।
चुन्निनकी चौकी चढ़ी चन्दमुखी चूड़ामनि,
चाहनसों चैत करें चैनके चरित हैं॥

अन्य भाषाभाषी अपनी अपनी भाषाके दो चार शब्दोंमें अनुप्रास आता अवलोकन कर आनन्दित और गद्गद हो जाते हैं। पर यहां तो चारों चरणोंमें चकारकी भरमार है! अफसोस है, तोभी हम हिन्दीकी हिमायत न कर उर्दू अंगरेजीका ही आल्हा अलापते हैं। खैर।

इसलिये मैंने पद्य परित्याग कर गद्यकी ओर ही गमन किया और वहां राजारईस, राजारंक, रावउमराव, सेठसाहूकार, कविकोविद, ज्ञानीध्यानी, योगीयती, साधुसन्यासीसे लेकर नौकर चाकर, तेलीतमोली, बनियां बक्काल, कहार कलवार, मेहतरचमार, कोरी किसान और लुच्चेलफंगेतककी बातचीत, गपशप, बात व्यवहार, रहनसहन, खानपान, रफतारगुफतार, चालचलन, चालढाल, मेलमुलाकात, रंगरूप, आकृति प्रकृति, जानपहचान, हेलमेल, प्रेमप्रीति, आवभाव, जातपांत, रीतरस्म, रस्मरवाज, रीतनीत, पहनावे ओढ़ावे, डीलडौल, ठाठबाठ, बोलचाल, संगसाथ, संगत सोहबतमें अनुप्रासका असल दखल पाया। मैंने अपनी ओरसे न कुछ घटाया न बढ़ाया, न काटा न छांटा और न चुस्त दुरुस्त ही किया। शब्दोंकी जिस सूरत

शकलमें जहां पाया वहांसे वैसे ही उठाकर ठौरठिकानेसे मौकामहल देख रख भर दिया है।

अन्वेषणके पहले अनुप्रासका नामधाम, आकार प्रकार, रंगढंग और नामोनिशान जान लेना जरूरी है। अंगरेजोके Alliteration & Assonance, उर्दू फारसीका काफिया रदीफ और संस्कृत हिन्दीका अनुप्रास नाममें दो होनेपर भी काममें एक ही हैं।

स्वरके विना व्यञ्जन वर्णके साम्यको अनुप्रास कहते हैं। यानी वाक्य और वाक्यांशमें वारंवार एक ही प्रकारके व्यञ्जन वर्णके आनेको अनुप्रास कहते हैं। इसके अनेक रूपरूपान्तर हैं पर प्रधान पांच ही हैं जैसे ;

(१) छेकानुप्रास—भोजन विना भजन।

(२) वृत्यनुप्रास—हिन्दी साहित्य सम्मेलनके सभापतिका सुन्दर सिंहासन।

(३) श्रुत्यनुप्रास—खेलकूद, जङ्गलझाड़ी।

(४) अन्त्यानुप्रास—अतत्व सर्वत्र है, भारतमित्र सुपत्र।

(५) लाटानुप्रास—शिक्षिता अबला अबला नहीं है।

अच्छा अब असली हाल सुनिये। अनुसन्धानके अर्थ कमर कसते ही मुझे अपने इर्दगिर्द, अगलबगल, आड़ोसपड़ोस, टोले मुहल्ले, घरबाहर, भीतरबाहर,

आसपास, इधरउधर, नातेरिश्ते, बन्धुबान्धव, भाईबन्द, भाईभतीजे, कुटुम्बकबीला, पुत्रकलत्र, बालबच्चे, लड़केबाले, जोरूजांते, चूल्हेचक्की, घरबार, अपनेबेगाने, मानभानेज, भाईबिरादरी, खानदान, परिवार तमाम अनुप्रास ही अनुप्रास नजर आने लगा। इसका अनुमान नहीं प्रत्यक्ष प्रमाण लीजिये। मेरा नाम जगन्नाथप्रसाद, स्टेशन जसुई, ससुर जहांगीरपुरनिवासी जौनमाने जसवन्तरायजीके जेठेबेटे जयन्तीप्रसादजी, मामा जयकृष्णलालजी और लड़का यदुनन्दन है। मेरा आदि निवास मथुरा, मध्य मिरजापुर और वर्त्तमान मलयपुर जिला मुंगेर, प्रवास मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट (कलकत्ता), अन्न मईमिश्र, हिस्सेदार मिरजामलजी और चाचा मुरारीलाल तथा मथुराप्रसाद महोदय हैं। उपाधि चौबे चतुर्वेदी, काम चपड़ेका और उमर चालीसकी है। गोत्र सौश्रव है। किस्सा कोताह, परिजन, पुरजन, अरिजन, स्वजन सबकी मोहममता और मायामोह छोड़, मुंह मोड़, सजधज और बनठनकर अनुप्रासकी तलाशमें निकल पड़ा।

वाणिज्य व्यापार।

चूंकि अपना धर्मकर्म्म वाणिज्य व्यापारसे चलता

है—नौकरीचाकरीसे कुछ लेनादेना नहीं। बस, जवानी दीवानीके फन्देमें फंस मनमानी घरजानी करता पहले बंगाल बङ्की बड़ाबाजार ब्रेञ्चमें जा पहुंचा तो क्या देखता हूं कि, रोकड़ जाकड़, हिसाब किताब, खाते पत्तर, उचन्तखाते, खर्चखाते, खैरात खाते, खुदरा खर्च खाते, बट्टे खाते, ब्याजबट्टे, लेनदेन, नकराई सकराई, मितीके भुगतान, खोखे, पैठ, परपैठ, देने पावने, नाम जमा, लेवाल देवाल, लेवाल बेचवाल, साझे शराकत, सौदासुल्फ, तारवार, लेने बेचने, खरीद बिक्री, खरीद फरोख्त, बेचनेखोचने, मोल लेने, क्रयविक्रय, मालटाल, मालजाल, मालमता, बिलटीबीजक, बाकीबकाये, मत्थे पोते, जमीन जायदाद, धनदौलत, धनधान्य, अन्नधन, सौकेसवाये, नफे मुनाफे, नफे नुकसान, आमदनी रफ्तनी, आगत निर्गत, रूंकधोक, दरदाम, मोलतोल, बोहनीबट्टे, बाजारदर, देनदार, दूकानदार, सर्राफ, बजाज, मुनीम गुमाश्ते और बसनेके ब्राह्मणोंकी कौन कहे दिवाले निकालने, टाट उलटने, बम बोलने, आफीशियल असायनी और इनसालवेंट अदालततकमें अनुप्रासका आसन जमा है। केवल यहीं नहीं दल्लाल, नमूने, कामकाज, कारबार, कारब्योहार, कामधन्धे, खुशीके सौदे, कलकारखाने,

कलके कुली, जहाजकी जेटी और बट्टेचट्टेमें भी आप आ बैठे हैं।

बाजार बढ़े चढ़े या घटे, गिरे या उठे, तेज हो या मन्दा, सुस्त या समान रहे, मारवाड़ी महाजन हो चाहे बंगाली व्योपारी, व्योहरे बनिये हों चाहे ब्राह्मण, अनुप्रासके चक्करमें सब ही हैं। उत्तमर्ण अधमर्णमें, स्वदेशी शिल्पमें, सूची शिल्पमें, श्रमशिल्पमें, शिल्पसभामें, श्रमजीवी समवायमें, कृषिशिल्पप्रदर्शिनीमें, वैश्यवृत्तिमें, व्यवसायात्मिका बुद्धिमें, विज्ञान वाणिज्यमें, अर्थशास्त्रमें, कलाकौशलमें, व्यापारे वसते लक्ष्मी या लक्ष्मीर्वसति वाणिज्ये इस मूलमन्त्रमें भी अनुप्रास आ गया है। अमानतमें खयानत करो, धन गबन करो, चाहे बचत बचाकर नौ नकद न तेरह उधार करो, कच्चे चिट्ठेको पक्का समझो या सफेदको स्याह करो, बङ्कसे बन्धकका बन्दोबस्त कर ब्याज बढ़ाओ, जूट पाटका फाटका या सट्टा करो पर अनुप्रासका अदर्शन न होगा।

हमारे लाखके लेनेवाले रेलीब्रदर्स, अर्नथीजन, वेकरग्रे, टौमसनलेजन और लालमारसलपर तथा बेचनेवाले मिरजापुरी महाजन गरीब फकीर, बन्धू बुझावन, मंगन झंगन, शिवचरनसहाई, झब्बूलाल, चुन्नीलाल

लुनावत और रामस्वरूप रामसकलरामपर भी अनु-प्रासका अनुग्रह है। यह दूकानदारी या बनावटी बात नहीं, सच्चा सौदा है।

अग्रसर हुआ तो कलकत्तेके बड़े बाजारमें, दिल्लीके चांदनी चौकमें, बनारसके ठठेरी बाजारमें आगरेके किनारीबाजारमें, मिरजापुरके धूंधीकटरेमें, कानपुरके कलकटरगञ्जमें, जयपुरके जौहरीबाजारमें, प्रयागके जानसेनगञ्जमें, मुंगेरके बेलनबाजारमें, भागलपुरके सूजागञ्जमें, मैनपुरीके मदार दरवाजेमें, पटनेके खुचकल्लेमें, बम्बईके कालवा देवीमें भी अनुप्रासको अकड़ते पाया। अस्तु।

साहित्य।

अर्ज्जन उपार्ज्जनके उपरान्त साहित्यसेवा है। संस्कृत साहित्यको कौन कहे, राष्ट्र भाषा हिन्दीके साहित्यसंसारमें भी अनुप्रासकी आंधी आ गयी है। दिव्य दृष्टिसे नहीं चर्म्मचक्षुओंसे ही चश्मा लगा आप देखेंगे कि, कविकुलकुमुदकलाधर, काव्यकाननकेसरी और कविताकुञ्जकोकिल कालिदास भी काव्य कल्पनामें अनुप्रासका आवाहन करते हैं। कहीं कहीं तो कष्ट-कल्पनासे काव्यका कलेवर कलुषित हो जाता है। यह

कपोलकल्पना नहीं कवि कोविदोंका कहना है। खैर, वंशीवट, यमुना निकट, मोर मुकुट, पीतपट, कालिन्दी-कूल, राधामाधव, व्रजवनिता, ललिता, विधुवदनी, कुंवर कन्हैया, नन्द यशोदा, वसुदेव देवकी, वृन्दावन, गिरि-गोवर्द्धन, ग्वालवाल, गो गोप गोपी, तालतमाल, रसाल साल, लवंगलता, विपिनविहारी, नन्दनन्दन, विरहव्यथा, वियोगव्यथा, संयोग वियोग, मधुर मिलन, मदनमहोत्सव और मलयानिल ही नहीं भिल्लियोंकी भंकार, वीरबादर, घनगर्जन वर्षण, दामिनीकी दमक, चपलाकी चमक, बादरकी गरज, शीतल सुगन्ध मन्द मारुत, कुसुमकलिका, मदनमञ्जरी वीरबहूटी, चोआचन्दन, अतर अगरजा, तेलफुलेल, मेंहदी महावर, सोलहशृङ्गार, मृगमद, राइ-रद, कुमुद कमलकल्हार, स्थलकमल, सरसिज, सरो-रुह, पद्मपत्र, एलालता, लज्जावती लता, छुईमुईकी पत्ती, कोयलकी कुहक, कूजितकुञ्जकुटीर, शशि, बसन्ती वायु, मलयमारुत, मधुमास, युवक युवती, नवयौवन, षोड़शी, स्मरशर, पवित्र प्रेम, प्रेमपाश, प्रेमपिपासा, यामिनी-यापन, रमणीरत्न, सुखसागर, रससागर, दुःखदावानल, अन्धअनुराग, मुग्धामध्या, प्रोषितपतिका, वासकसज्जा, अधवा विधवा सधवा, चित्तचोर, मनमोहन, मदन-

मोहन, दिलदार यार, प्राणनाथ, प्राणप्रिय, पीनपयोधर, प्रेमपत्र, प्रेमपताका, प्राणदान, सुखस्वप्न, आलिङ्गन-चुम्बन, चूमाचाटी, पादपद्म, छत्रिम कोप, भ्रूभङ्ग, भृकुटीभङ्गी, मानमर्द्दन और मानभञ्जन भी अनुप्रासके अधीन है।

कम्बुग्रीव, बाहुवल्ली, करकमल, पद्मपलाशलोचन, कुचकमल, कुचकलश, कुच कुम्भ, निविड़नितम्ब, पद-पल्लव, गजगमन, हरिणनयन, केसरिकटि, गोल कपोल, गुलाबी गाल, कोमल कर, दाड़िमदसन और साफ़ सुथरी गोरी नारीकी मधुर मुसकानमें अनुप्रासका जैसे वास है वैसे ही काली कलूटी, मैली कुचैली, नाटी मोटी खोटी छोटी, कर्कशा, कलहकारिणी कुलटाके बिखरे बालोंमें भी है। तात्पर्य्य यह कि, प्रेममें नेम नहीं, तक-ल्लुफमें सरासर तकलीफ है। प्रेमका पन्थ ही पृथक् है। निराला होनेपर भी आला है। इसमें सुख दुःख और जीवन मरण दोनों हैं। हँसा सो फँसा। इश्क़ हक़ीकी हो या मजाजी उसमें मार और प्यार दोनों हैं। भगतके वशमें हैं भगवान। आशिक माशूक और प्रेमिकप्रेमिकाओंके हावभाव, नाजनखरे, चोचले, ढकोसले भुक्तभोगी ही जानते हैं। जो दिलजले हैं

२

उनका दिल भला कहीं क्यों लगने लगा। जो सदा सर्व्वदा मक्खियां मारा करते हैं उनसे भला क्या होना जाना है। जिसका सनेह सच्चा है वह लाख आफत विपत होते भी सही सलामत मंजिले मकसूदको पहुंच जाता है। उसके लिये विघ्नबाधा, विपदबाधा कुछ है ही नहीं। यहांतक तो अनुप्रास आया। अब आगे राम मालिक है।

व्याकरणके वर्त्तमानभूतभविष्यतमें, संज्ञासर्व्वनाममें, विशेष्यविशेषणमें, सन्धिसमासमें, कर्त्ताक्रियाकारकमें, कर्त्ताकर्म्मकरणमें, उपादानसम्प्रदानअधिकरणमें, सम्बन्धसम्बोधनमें, उद्देश्यविधेयमें, कर्त्तरिकर्म्मणि प्रयोगोंमें, तत्पुरुष कर्म्मधारय बहुव्रीहि द्वन्द द्विगु समासोंमें, विभक्तिप्रत्ययमें, प्रकृतिप्रत्ययमें, आसक्तिआकांक्षामें, सार्थक निरर्थक शब्दोंमें, जातिव्यक्ति और भाववाचक संज्ञाओंमें जब अनुप्रासका निवास है तब सामयिक साहित्यकी सामग्री कागजकलम, कलमपेनसिल, रूलपेनसिल, हेन्डल होलडर, स्याही सोख, निब पिन, चाकूकैंची, एडीटर कम्पोजिटर, प्रिनटर पबलिशर, सम्पादक मुद्रक प्रकाशक, प्राप्तपत्र, प्रेरितपत्र, सम्पादकीय स्तम्भ, साहित्यसमाचार, तार समाचार, तड़ित

समाचार, तार तरङ्ग, विविध समाचार, मुफस्सिलसमाचार, साहित्य समालोचना, क्रोड़पत्र, वैल्युपेबल पारसल और प्रेस सेनसरमें भी अवश्य ही है।

भारतमित्र, अभ्युदय, वंगवासी, प्रताप, जयाजीप्रताप, सज्जनकीर्त्ति सुधाकर, वीरभारत, पाटलिपुत्र, बिहारबन्धु, मिथिलामिहिर, सत्यसमाचार, सत्यसनातन, चित्रमयजगत्, सद्धर्म्मप्रचारक, अवधवासी, आनन्द, वेंकटेश्वर समाचार, दैनिक तथा साप्ताहिक पत्रोंमें और सरस्वती, मर्य्यादा, नवनीत, जासूस, नवजीवन, शारदाविनोद, स्त्रीदर्पण, मनोरञ्जन, वैष्णवसर्वस्व, सुधानिधि, चतुर्वेदीचन्द्रिका, महामण्डल मैगजीन, ब्रह्मचारी नामक मासिक पत्रोंमें अनुप्रासका अंश है।

लेखकोंमें बाबू बालमुकुन्द वर्म्मा, गंगाप्रसाद गुप्त, लाला भगवानदीन, व्रजराज बहादुर बी० ए०, नरेन्द्रनारायण, भास्कर भालेराव, हरिहरस्वरूप शास्त्री, तीर्थत्रय सकलनारायण शर्म्मा, अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी, वासुदेव, बाबूराव विष्णु पराड़कर, यशोदानन्दन अखौरी, रामनारायण चतुर्वेदी, महावीरप्रसाद द्विवेदी, पद्मसिंह शर्मा, विद्यावारिधि, (ज्वालाप्रसाद मिश्र), नन्दकुमारदेव शर्म्मा, गिरिजाकुमार घोष, चन्द्रधर गुलेरी, कृष्णकान्त, मन्नन

द्विवेदी गजपुरी, गोपालराम गहमरी, रामजी लाल, लज्जाराम, रुद्रदत्त, गौरीशङ्कर हीराचन्द, राधाचरण, द्वारकाप्रसाद चतुर्वेदी, रामावतार, रामरणविजयसिंह, अयोध्यासिंह उपाध्याय, देवकीनन्दन, राय देवीप्रसाद पूर्ण, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, अम्बिकादत्त व्यास, माधव मिश्र, श्रीनिवासदास, सदानन्द मिश्र, तोताराम, लल्लूलाल और लेखिकाओंमें यशोदा देवी, राजमन्नी देवी, कृष्णकला, कृष्णकुमारी, तोरन देवी लली, रामेश्वरी नेहरू और हेमन्तकुमारी चौधरी अनुप्रासके अन्तर्गत ही मिलीं।

द्विवेदीजी कृत 'कालिदासकी निरंकुशता', मनसाराम लिखित 'निरंकुशता निदर्शन', आत्माराम रचित 'अनस्थिरता', मौजीरामका 'विचार वैचित्र्य', शिवशम्भु शर्म्माके चिट्ठे, मस्तरामके मन्तव्य, मनसुखाका मनसूबा, गिटपिटानन्द, गोलमालकारी, कलकत्तेकी साहित्यसंवर्द्धिनी सभा, प्रयाग या फीरोजाबादका भारती भवन, पाठकजीका पद्मकोट, सिंहजीका 'सतसई संहार', व्यासजीका 'विहारी विहार', प्रतापनारायणजीका 'सांगीत शाकुन्तल', श्याम + शुक + गणेश विहारी मिश्रोंका 'बन्धुविनोद', या 'कविकीर्त्तन' तथा

'नवरत्न', मैथिलीशरणकी 'भारत भारती', अयोध्यासिंह-जीका 'प्रिय प्रवास' तथा 'ठेठ हिन्दीका ठाठ', अयोध्या-नरेशका 'रसकुसुमाकर', जोधपुरी मुरारिदानजीका 'यशवन्त यशोभूषण' और मेरा 'संसारचक्र' तथा 'विचित्र विचरण' भी अनुप्रास आमेज हैं।

हिन्दी साहित्य सम्मेलनके सभापति होनेके सबब ही माननीय मदनमोहन मालवीय, गोविन्दनारायण मिश्र, बदरीनारायण चौधरी, महात्मा मुनशीराम और पंडित श्रीधर पाठक तथा महामन्त्री पुरुषोत्तमदास टनडनको भी अनुप्रासने अछूता न छोड़ा।

अनुप्रासके अत्यन्त आग्रहसे ही बाबू श्यामसुन्दर दास इस बार सभापतिके आसनपर आसीन हुए। पं० ठाकुरदत्त शर्म्मा स्वागतकारिणी समितिके मन्त्रिपदको त्याग जड़ीबूटी जमा करने हिमशैल शिखरपर सिधारे और पं० राजाराम शास्त्री उक्त पदपर पधारे थे। अनु-प्रासके अनुरोधसे ही राय रामशरणदास बहादुरने भी स्वागतकारिणी समितिका अध्यक्ष होना अङ्गीकार किया और मनहूस मुहर्रमकी तङ्ग तातील तजकर क्रिसमसका सुहावना समय स्थिर हुआ। लोगोंको लखनऊसे ही लाहोर चलनेकी लालसा लगभग साल

भरसे लगी हुई थी पर दानापानीने सबपर पानी फेर दिया। अन्नजल बड़ा प्रबल है। पग्गड़बाज पञ्जाबियोंकी परिवर्त्तनप्रियता अथवा लहरी लाहौरियोंकी लबड़धोधोंसे हमारे तुम्हारे सबके छक्के छूट गये। हक्के बक्के हो इधर उधर ताक झांक करने लगे। घिग्घी बंध गयी, बोल बन्द हुए। पर स्थायी समिति स्थिर रही। किंकर्त्तव्यविमूढ़ न हो उसने सोचा समझा और अलाहाबादमें ही अधिवेशनका आयोजन कर एक सख्त सवाल या मुफीद मसला हल कर डाला। लिहाजा लाचार हो लाहोरकी लम्बी मुसाफरीसे मुंह मोड़ अनुप्रासके अनुसन्धानमें मैं भी पञ्जाब मेलसे पटने होता प्रयाग पहुंच ही गया।

धर्म्म।

साहित्यसेवाके बाद धर्म्म कर्म्म है। धर्म्मान्ध, धर्म्मधुरन्धर, धर्म्मधुरीण, धर्म्मावतार और सनातन धर्म्मावलम्बी बनकर पोथीपुराण, श्रुतिस्मृति, शास्त्रपुराणका पठन-पाठन और श्रवण मनन निदिध्यासन करो, प्रतिमापूजन प्रतिपादन, मूर्त्तिपूजामण्डन और श्राद्ध तर्पणका शङ्का-समाधान करो; पाखण्डी पंडों, पुरोहितों और पण्डितोंके पैर पूजो, लकीरके फकीर बनो, संयमनियम, तीर्थ

व्रत, योगभोग, जपतप, यागयज्ञ, ज्ञानध्यान, स्नानध्यान, पूजापाठ कर कर्म्मकाण्डी कहाओ, हव्य कव्य गव्य, पञ्चामृतपञ्चगव्य, धूपदीप, चन्दन, पुष्प, कुमकुम, गङ्गा-जल, तुलसीदल और ताम्बूल पुंगीफलसे परमात्माका पूजन अर्च्चन करो, चाहे आर्य्यसमाजी हो बालविवाह, विधवा विवाह, बहुविवाह, वृद्ध विवाह, बेमेल ब्याहका विरोध कर समाज संस्कार, समाज सुधारके साथ नियोग निरूपण करो या खण्डनमण्डन, शास्त्रार्थ, सन्ध्यावन्दन, होमहवन कर मांसपार्टी, घासपार्टी पैदा करो पर अनु-प्रास सदा सर्वत्र अनुसरण करता है। केवल यहीं नहीं; प्रवृत्ति निवृत्ति, स्वर्ग नरक, पापपुण्य, अर्थ धर्म्म काम मोक्ष, मुक्ति मोक्ष, लोक परलोक, यमयातना, साकार निराकार, निर्गुण सगुण, काशीकरवट, दान पुण्य, जन्म मरण, जन्ममृत्यु, विषयवासना, ब्रह्मविद्या, मुक्तिमार्ग, ज्ञान नेत्र, आगम निगम, वेद उपनिषद, वेद वेदाङ्ग वेदान्त, ब्रह्मवैवर्त्त, श्रीमद्भगवद्गीता, शास्त्रसिद्ध विधि निषेध और वेदविहित कर्म्मोंमें भी अनुप्रासका आदर देखा।

आचारविचार, नेमधरम, नित्यनैमित्तिक क्रिया कर्म्म, ध्यानधारणा, स्तवस्तोत्र, यन्त्रमन्त्रतन्त्र, ऋद्धि-

सिद्धि, शुभलाभ, भजनपूजन, भगवच्चिन्तन, प्रायश्चित्त पुरश्चरण, वृद्धिश्राद्ध, आद्यश्राद्ध, सपिण्डणश्राद्ध, पितृप्रेत-कृत्य, पिण्डप्रदान, कपालक्रिया, जलाञ्जलि, तिलांजलि, पितृपक्ष और गोग्रासमें भी अनुप्रासका अनुभव किया।

दरसपरस मज्जन पान करो, सत्सङ्ग या साधुसमागमसे दुस्तारासार संसारको अनित्य समझो, या सांसारिक सुखसम्भोगमें सारा समय समर्पित कर दो, मारवाड़ी सहायक-समिति संस्थापित करें या श्रीविशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालय बनवावें पर वह अनुप्राससे अलग नहीं हो सकते। झुनझुनूवालेका लछमन झूला, रामचन्द्र गोइनकाका जनाना घाट, सोदपुरका पिंजरापोल, राय बहादुर बदरीदास मुकीमका माणिकतल्लेवाला मन्दिर, मिरजापुरकी गोवर्द्धनगोशाला, सहारनपुरका (मेरी) सारदासदन, कांगड़ीका गुरुकुल, हिन्दीहीन हिन्दू विश्वविद्यालय, बाबा ज्ञानानन्दका शरीर और निगमागम मण्डली, व्याख्यानवाचस्पति महामन्त्री दीनदयालुजीका श्रीभारतधर्म्म महामण्डल, प्रयागकी सेवासमिति और धूकापन्थी भी अनुप्रासके आश्रित ही हैं।

हिन्दुओंके परब्रह्म परमात्मा, ब्रह्मा विष्णु शिव, वरुण कुबेर, जय विजय नामक दोनों द्वारपाल, सूर्य्य-

चन्द्र, ग्रहनक्षत्र, काली कमला शीतला, सरस्वती, महा-माया, इन्द्राणी शर्वाणी कल्याणी, देवदानवों, देवीदेव-ताओं, नरोकिन्नरोअप्सराओं, गन्धर्व्वों और भूतप्रेत पिशाचोंमें ही नहीं मुसलमानोंके पाकपरवरदिगार, अकबर, हजरत मुहम्मद, पीर पैगम्बर, पांचपीर, हसन हुसेन, मक्केमदीने, कलामअल्लाह, जामा मसजिद, मोती मसजिद, मीना मसजिद, रोजारमजान, अलहम दुलि-ल्लाह, शीया सुन्नीमें ; ईसाइयोंके ईसामसीह, बाइबल, मरियम, देवदूत, प्रभातप्रार्थनामें तथा बौद्धोंके बुद्धदेव, शाक्यसिंह, पद्मपाणि, प्रज्ञापारमिता, बौद्धविहार, दलाई-लामामें, सिखोंके नानक और गुरुगोविन्दमें ; जैनियोंके पार्श्वनाथ पहाड़में, आर्य्यसमाजियोंके स्वामी दयानन्द सरस्वती और सत्यार्थप्रकाशमें, ब्रह्मसमाजियोंके राजाराम-मोहनरायमें और वैष्णवोंके वल्लभाचार्य्यमें भी अनुप्रास है।

कुम्भ मेलेपर ओ० आर० आर०से हरद्वार जा हरकी पैरीके पुलके पास जगज्जननी जान्हवीके शीतल जलसे पाप ताप, त्रयताप प्रक्षालन करो, त्रिवेणीके तटपर माघ-मेलेमें मुण्डन करा मकर नहाओ, सूर्य्यग्रहणके समय कुरुक्षेत्रमें या मलमासमें राजगिर जा स्नानदान करो, संक्रान्तिके समय सागरसंगम या गंगासागरका सफर

करो, कार्त्तिककी पूर्णिमापर हरिहरक्षेत्र जाकर गण्डकीमें गोते लगाओ, बैजनाथजीमें बं बं बोलो, या काशीके कङ्कर शिवशङ्कर समान जानो, कोटकांगड़ेकी नयनादेवीके दर्शन करो या मन चंगा तो कठौतीमें गंगाके अनुसार शिक्षा दीक्षा ले घरपर ही अतिथि अभ्यागतों, साधु संन्यासियोंकी सेवा कर मेवा पाओ, चाहे व्यसनी व्यभिचारी विहारी विलासी बाबू बनकर विषयवासनाके वशीभूत हो बागबगीचेकी बारहदरीमें चुपचाप संगीसाथियोंके साथ मिलजुल आमोद प्रमोद, ऐशोइशरत, ऐशोनिशात करो, शराब कबाब और मांस मछलियां उड़ाओ, होटलोंमें बोतलोंके बिलोंका टोटल दे बङ्कपर चेक काटो या भाटभिखारियों, दीनदुखियों और लूलेलंगड़ोंको कानी कौड़ी न दे महफिलमें मुजरा सुन रंडीभंडवे और भांड़ भगतिनोंको इनाम एकराम दे सब स्वाहा कर डालो या शिखासूत्र परित्याग परमहंस बनो या वल्लभकुलियोंको "तन मन धन अर्पन" कर समर्पण ले लो पर अनुप्रास सदा साथ रहेगा।

धर्मकी गहन गति मनके अनुकूल न हो तो समाज संशोधनकी ही ठहरे। पहले समाज शरीरका स्वरूप स्थिर करो, विवाह बन्धन, जातपांत, छूआछूत, चूल्हे-

चौके, पञ्चपरमेश्वर और खानपानका ध्यान छोड़ एकामेक गड्डमगड्ड हो पुरुषोत्तमपुरीकी प्रथा प्रचलित करो या दादूदयाल और सुन्दरदासकी सच्ची सलाह सुन वाममार्गसे मुंह मोड़ो या पतित जातियोंको शुद्ध कर नया नाता जोड़ो या स्त्रियोंको शिक्षा और स्वतन्त्रता दे उनके शुभचिन्तक बनो या उन्हें निपट निरक्षर और निपढ़ बना परदेके पीछे रख कूपमंडूक बनाओ पर अनुप्रास पास ही रहेगा।

आश्रम।

ब्रह्मचर्य्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास यह चार आश्रम हैं। इस कराल कलिकालमें ब्रह्मचर्य्यकी व्याख्या वृथा है। नामके ब्रह्मचारी बहुत पर कामके कम हैं। वानप्रस्थ विदा हो चुका है। संन्यासका स्वरूप है पर शीलस्वभाव नहीं। हां, गृहस्थाश्रमका गौरव ग्वालोंकी कौन कहे, गोस्वामियोंतकमें है। इसलिये अब मैं गृहस्थके घरमें ही घुसकर अनुप्रासकी तलाश करता हूं क्योंकि धर्म्मकी चर्चा करना लोहेके चने चबाने हैं।

गृहस्थाश्रम।

गृहस्थाश्रममें गमन करते ही विवाह—पाणिग्रहणकी चिन्ता चित्तको चञ्चल करती है। घरनीके बिना

घर नहीं—गृहिणीके बिना गृह नहीं। स्वजनों, परिजनों, पुरजनोंसे नोची नजर न करो तो बनी बात बिगड़ती है क्योंकि कारबार कारिकर्त्तेका सङ्गसाथ ठहरा। शहर, बाजार और नगरको ही नहीं गवईं गांव और दिहातोंकी भी यही दशा है। दादा दादी, मातापिता, चाचा चाची, काका काकी, भाई भौजाई, भाई भतीजे, जीजा जीजी, फूफा फूफी, नाना नानी, मामा मामी और बहन बहनोईकी बदौलत सम्बन्ध—सगार्त्त—सगाई हो गयी। वैदिक लौकिक रीतभांत होने लगी। गाने बजाने, नाचगान, रागरङ्गका बाजार गर्म हुआ। चहलपहल हुई। सजधज, बाजेगाजे, ठाठबाठ, धूमधाम, धूमधड़क्के, तुमतराक और शानशौकतसे ठस्सेके साथ बनरेने सिरपर सेहरा रख घरसे घोड़ी या पीनस पालकी, तामजाम या बिहारकी खड़खड़िया पर शुभसायतमें यात्रा की। अपने बेगाने, अपने पराये बराती बने। खाते पीते, उठते बैठते, सोते जागते पैदल चलते ठीक ठिकाने पहुंचे। यह उस समयकी बात है जब रेलका जाल नहीं फैला था। अब तो स्टेशन जा, टिकट कटा, माल तुला, महसूल दे दिवा पलाटफौर्मपर टहलने लगे। पहलेसे डब्बे रिजर्व करा लो तो कोई

झंझट नहीं। सिगनेलने सिर झुकाया। गाड़ी आयी। चढ़ बैठे। नहीं तो भीड़भाड़में धक्कमधक्के, ठेलमठेले, ठायंठायं, चखचख, ले ले, दे दे, तू तू, मैं मैं, हायहाय ही नहीं, लप्पड़ थप्पड़, धौलधप्पे, चपत तमाचे, चांटे चटकने चनकटे, मुक्के, लात जूते, जूतीपैजार, मारपीट-तककी नौबत पहुंच जाती है। पर तोभी गाड़ीमें गुजर नहीं। घंटा बजते सीटी हुई और गाड़ी यह गयी वह गयी। कुलियोंकी कामना पूरी करनेमें कोताही की और इज्जत हुई। इससे स्टेशनमास्टरसे ले मेहतरतकका मुंह मीठा करना मुसाफिरोंके लिये मुफीद है। तीसरे दरजेके मुसाफिरोंसे ही रेलवे-वालोंका रोजी रुजगार, रोजीरोटी चलती है और घर भरता है पर तोभी उनके सुख दुखका पूछनेवाला कोई नहीं और न कोई उनको खोज खबर ही लेता है। सचमुच उनका धनीधोरी कोई नहीं है। गरमीके मौसममें पथिक पिपासासे पीड़ित हो पुकारते पुकारते पसीने पसीने हो जाते हैं पर पानीपांड़े जो (चाहे वह कोरी कलवार ही क्यों न हो) टससे मस नहीं होते। कृपा कर आये भी तो डोल, बालटी, लोटा खाली दिखा रफूचक्कर हो जाते हैं। मुसलमानोंके सक्के या भिश्ती

सुराही गिलास लिये पहले गोरे गार्ड ड्राइवरोंके ढिंग जाते। पीछे मकरूह मुसाफिरोंका मुश्राइना करते हैं। यही नहीं, गाड़ियां लड़ गयीं या आपसमें उनकी टक्कर हो गयी तो जानकी जोखिम है। प्राणपखेरूके उड़नेमें विलम्ब नहीं होता।

अच्छा अब आगेका हाल अहवाल सुनिये। बरातके डेरा डालते ही बेटीके बापपर बेभाव पड़ने लगती है। वह बेचारा बराती घराती, आये गये, पई पाहुने, न्योतहारी व्योहारी, दोस्त आशना, गुरु पुरोहित, सगे सम्बन्धीके आवभाव, आदरसत्कार, खिलाने पिलाने सुलानेके प्रबन्धमें ही पग जाता है। गरजने चिल्लाने, बकने भूकने, समझाने बुझाने और गुलगपाड़े से तबीयत हैरान परीशान रहती है। सुबह शाम, सांझ सवेरे जब देखो तब वही बात। अकेलेकी आफत है। जो धनजनसे भरा पूरा है उसकी कुछ मत पूछो। भागवानका हल भूत जोतता है। गरीबोंको भगवानका ही भरोसा है। उनका बेड़ा वही पार करता है। इस लिये हिम्मत हारने या मन मारनेकी जरूरत नहीं। पर औरतें गीत गाने, गाली गाने, सीठने सुनाने, सिङ्गारपटार करने और चोटीपाटी, मेंहदी महावर

मिस्सी सुरमेंमें ही मस्त रहती हैं। उन्हें फालतू बातोंसे क्या मतलब? खैर, शुभ समयमें कन्यादान हुआ। मातृका पूजन, शाखोच्चार, सप्तपदी, पादप्रक्षालन, मधुपर्क, सिन्दूरदान आदि शास्त्रोक्त रीतियां यथासमय की गयीं।

मांगरमंडवे, कुंवरकलेवे, बत्तीमिलाई, गूंथखुलाई, पत्तलबदलौअल, टीकापटा, पांवपखरावनी आदि स्त्रियाचारमें कुछ कोरकसर या गलती भूल नहीं रही। यहांतक कि, गोबरगणेशकी पूजा भी पहले ही विधिवत् कर दी गयी थी। वर वधूको बधाइयां और मुबारकबाद मिला। दोनों ओर खूब वारे न्यारे हुए। खर्चवर्च हैसियतके हिसाबसे करना ही होशियारोंका वसूल है। नहीं तो ब्याह बाद पत्तर भारी हो जाती है।

इसके बाद जेमाजूठी, ज्योनार भोज, भोजनछाजनकी बारी आयी। आहारेव्योहारे लज्जा न कारे। लाचार निर्लज्ज हो न्योता खाने लोग चले आये। पहले पानीपत्तर, जलपत्तल, परोसनेकी पुरानी प्रथा है। अब साथमें लोटा गिलास लानेकी चाल चल बसी है। इस लिये किसोरों, सकोरों, पुरबोंका प्रबन्ध हो जाता है। कच्चीपक्की, निखरेसखरे, आमिष निरा-

मिषका विचार बेहद्द बढ़ गया है। घृतपक्व पयोपक्वके भी प्रेमी हैं। पर कानकुब्जोंकी कहानी अकथ है। वह तीन जने इकट्ठे हो तेरह चूल्हे चाहते हैं। बेटी-रोटी व्यवहारका वहां बड़ा बखेड़ा है। पर हम चौबे चतुर्वेदियोंकी चाल निराली है। इनकी मथुरा ही न्यारी है। यहां भेदभाव नहीं। सब साथ खानेपीने-वाले हैं। हां, लकीरके फकीर जरूर हैं। लीक लगाये विना इनका काम नहीं चलता है। यथास्थान सबके आसीन हो जानेपर परोसनेवालोंने पाकप्रणालीके अनुसार परिवेषण प्रारम्भ किया। मैं भी सागसब्जी और सागतरकारीसे ही शुरू करता हूं। लीजिये :—

रसीला मठीला आलू, आलू परवल पालक, कोहड़ा कदुआ करैला केला करमकल्ला कच्चू, तुरई मुरई, मूली मटर, पपीता, रामतरोई, नेनवां, गोबी गाजर अरवी, करैलेकी कलौंजी, कचनारकी कलियोंका रायता, आलू और आमका अचार, अचार चटनी, चटपटी चटनी, आम आमलेका मुरब्बा, जलजीरा। कानकुब्जोंकी कढ़ी करायल, पपची पान।

कच्ची।

चावल दाल, रोटी पूरी, खीर झोर, खीरपूरी, खीर

श्रीफल बेल, चिरौंजी, किसमिस पिस्ते, मुनक्के, बादाम बिहीदाने, खीरे ककरी, तरबूज और खरबूजे भी खरीदे गये थे।

मुसलमानोंके लिये बावर्चियोंके बनाये कलिया कबाब, कलिया पुलाव, कोफता कोर्मा, शीरमाल जरदा बिरियानी, केक बिसकिट, चा चीनी, मुर्गमुतंजन वगैरह खाने अलग दस्तरख्वानपर चुने गये थे।

जिसे जुरता नहीं वह बेचारा बापुरा गरीब दाल-दलिया, सागसत्तू, चनाचबैना, रूखासूखा, मोटाझोंटा, मोटा महीन, पत्रंपुष्पं लेकर ही समधीका सत्कार करता है।

खानाखाने, भोजनकरने, भक्षणकरने, भकोसने और भखनेपर हाथमुंह धो, कुल्ला कर, खरके, तिनकेसे दांत खोद कोई पानसुपारी, लौंग लायची, सुरती जरदा तम्बाकू खाता है और कोई चिलम तमाकू, टिकिया तमाकू, हुक्का गड़गड़ा, चुरुट बीड़ी सिगरेट पीता है। नये शौकीन ताम्बूलविहार और जीनतानपर टूटते हैं। मतलब यह कि, बन्दोबस्त बड़ा बढ़िया था। जिसने जो मांगा, वही मिला।

इसके बाद बरात बिदा हुई। बरतन बासन,

बासनकूसन, असनबसन, जामाजोड़ा, [illegible], ओढ़नाबिछौना, तोशकतकिया, गहनागुरिया, गहना-गांठी, रुपयेपैसे, जहेज, दानदहेज [illegible] ज्यादा दिये गये थे। नगदनारायणने भी [illegible]। जिन लोगोंसे लेनदेनकी—ठहरौनीकी रीत है उनमें अक्सर झगड़ाझंटा, झगड़ा बखेड़ा होता है पर यहां बेखटके, गड़बड़सड़बड़के बिना हंसीखुशी मामला निपटा। बिदाके वक्त स्त्रियोंका मिलनाजुलना, लिपटना रोना, सिसकना रोनाधोना देखकर पत्थर भी पसीजता था। [illegible] बेटीकी बिदा है या दिल्लगी? दुष्यन्तके हरकारेके शकु-न्तलाको भेजते समय काननवासी कठोर कण्वका भी कलेजा कांप गया था। यह हमारा तुम्हारा नहीं कवियोंके कुलगुरु कालिदासका कथन है। खैर, बहूको बिदा के बरात बस्तीके बाहर हुई। गौनेरौनेकी रस्म भी पूरी कर दी गयी। जैसे गयी थी वैसे ही कुशल मङ्गल बरात घर वापिस आयी। बहूके निरीक्षन परीक्षन हो जानेके बाद बेटेबहू या वरवधुका गृहप्रवेश हुआ। पांवपड़ाई और मुंहदिखाई हुई। सास ससुर, देवरानी जिठानी, नन्द ननदोईसे नया नेह नाता लगा। ससुरालमें साली सलहज, सालासाली और साढ़का सम्बन्ध स्वयंसिद्ध हो जाता है।

यहांतक तो अनुप्रासके अन्वेषणमें कृतकार्य्य हुआ। आगे कौन कह सकता है कि, क्या होगा। पर मैं पीछे पैर देनेवाला नहीं। धैर्य्य धारण कर दिन दूने रात चौगुने साहस और उत्साहसे हाटबाट, घरघाट, नदीनाले, जङ्गल झाड़ी, वन पर्व्वतकी कौन कहे देश-विदेश और सात समुद्र पार जाकर द्वीपद्वीपान्तरोंमें दिनदोपहर, दिनदहाड़े, रातबिरात बेरोकटोक विचरण करूंगा और मौका मिलते ही अनुप्रासकी खुश-खबरी, शुभसमाचार सबको सुनाऊंगा। अभी तो गृहस्थाश्रम ग्रहण कर दारपरिग्रह ही हुआ है। उसके सुखसम्भोग, सुखशान्ति, सन्तानसुख, रागरंग और दुःखदारिद्र, शोकसन्ताप, कलह क्लेश, हर्षविषाद तथा जञ्जालका जिक्र ही नहीं आया है। गृहस्थको सब ही भोग भोगने पड़ते हैं। यह देहका दण्ड है। लीला-मयकी लीला अपरम्पार है। वह तिलको ताड़ और पर्व्वतको राई कर सकता है। भूतनाथ भगवान् भवानीपति अलबेले भोलानाथका ही भारी भरोसा है कि, वह भलीभांत भला करेंगे।

विज्ञापन ।

पण्डित जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी एम० आर० ए० एस० कृत पुस्तकें हमारे पास मिलती हैं ।

१	संसारचक्र (उपन्यास)	दाम	१)
२	बसन्तमालती तथा	,,	।)
३	तूफान (शेक्सपीअरके टेम्पेस्टका अनुवाद)	,,	-)
४	विचित्र विचरण (गलीवर्सट्रैवल्सका अनुवाद)	,,	।।।)
५	भारतकी वर्त्तमान दशा	,,	।)
६	स्वदेशी आन्दोलन	,,	=)
७	गद्यमाला (फुटकर लेखोंका संग्रह)	,,	।=)
८	कृष्णचरित्र	,,	१।)
९	राष्ट्रीय गीत	,,	-)
१०	अनुप्रासका अन्वेषण	,,	=)।।
	(श्रीमनसाराम लिखित) निरंकुशता निदर्शन	,,	।=)

चतुर्वेदी भोलानाथ शर्म्मा,

१०३, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट, कलकत्ता ।

और भारतमित्र मैनेजर,